INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

WWW.CASIRJ.COM
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

कबीर का आचार शास्त्र

डॉ सुरेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
बी.एल.जे.एस. कॉलेज, तोशाम (हरियाणा)

आचार शास्त्र की परिभाषा तथा क्षेत्र प्रत्येक युग में मतभेद के विषय रहे, फिर भी व्यापक रूप से यह कहा जा सकता है कि आचार शास्त्र में उन सामान्य सिधान्तों का विवेचन होता है जिनके आधार पर मानवीय क्रियाओं और उद्धेश्यों का मूल्यांकन सम्भव हो सके। अधिकांश लेखकों और विचारकों का मत है कि आचार शास्त्र का सम्बन्ध मानदण्डों और मूल्यों से है, न कि वस्तुस्थितियों के अध्ययन या खोज से इन मानदण्डों का प्रयोग व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन के विश्लेषण में किया जाना चाहिए।

संत कबीर का आचार शास्त्र व्यवहारिक जीवन में उपादेय तथा लयात्मक कर्मपूर्ण जीवन को प्रशस्त करने का आचार शास्त्र है। कबीर के अनुसार मानव जीवन अमूल्य है। इसलिए अगर राम से प्रेम नहीं किया गया तो जीवन को नष्ट हुआ समझना चाहिए। मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करना है। मोक्ष ही परम मूल्य है क्योंकि दुःखों की आत्यंतिक निवृति मोक्ष से ही सम्भव है। मन का विकार रहित होना ही मुक्ति है। आचार या नैतिकता का महत्व लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए ही है। शुद्ध आचरण ही परमात्मा की प्राप्ति में सहायक होता है। आचरण व्यक्ति की भावना की अभिव्यक्ति है व्यक्ति की पहचान आचरण से होती है कबीर के अनुसार आचरण या व्यवहार से मानव के अभीष्ट की सिद्धि एवं उनका विकास होता है। आचरण कभी भी निरर्थक नहीं जाता है। उससे सुयश की प्राप्ति होती है। कबीर जी ने संयम व सदाचरण को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। सदाचरण से मानवता का विकास एवं उन्नति होती है। सदाचरण के अन्तर्गत कथनी–करनी की एकरूपता, सत्य अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, इंद्रिय–संयम, दया, क्षमा, शील, विश्वास, श्रद्धा, विनय, मधुर वचन, धैर्य, स्वावलंबन, सरल जीवन, परोपकार, सेवाभाव सत्संगति इत्यादि आते है। कबीर साहब की सम्पूर्ण साधना सदाचार या नैतिक संयम पर ही अवलंबित है। अनैतिकता को उन्होनें बड़वानक बताया है जो बाँस के वृक्षों के घर्षण से उत्पन्न होकर उन्ही को भस्मीभूत कर देता है।

शुद्ध आचरण के बिना चित्त का विकार शून्य होना असंभव है तथा मुक्ति भी असंभव है। मनुष्य जानता है कि अवगुण त्याज्य है तथा सद्गुण ग्राह्य है, फिर भी वह न तो सद्गुणों को ग्रहण कर पाता है और न ही दुर्गणों का त्याग। कबीर मानव की इस मनोवृत्ति के लिए दोषी उसके मन को ठहराते हैं। गुण–अवगुणों के त्याज्यात्याज्य को जानते हुए भी मन वैसे ही अवगुणों में प्रवृत हो जाता है, जैसे अंधकार से बचने के लिए हाथ में दीपक लेकर देखते हुए भी कोई व्यक्ति कुएँ में गिर जाता हैः–

मन जाँणै सब बात, जाणत ही औगुण करै।

काहे की कुसलात, कर दीपक कूँवे पड़ै।[1]

कबीर जी अविवेकी मन की मंत्रणा के अनुसार अनुसरण करने का निषेध करते है उनके अनुसार मन सकल जीवों को नचाने वाला अत्यन्त चंचल, आत्मधन को चुराने वाला चोर एवं ठग है। मन के द्वारा सब देव और मुनिजन ठगे गए है। मन के भाग जाने के लिए लाखों द्वार हैं।

ई मन चंचल ई मनचोर, ई मन शुद्ध ठगहार।

मन मन करते सुर नर जहंड़े, मन के लछ दुबार।।.[2]

कबीर जी ने मन को मतवाला हाथी माना है। वह रोकने पर भी नहीं रूकता है। हमेशा विषय की और उन्मुख हो जाता है। उनके अनुसार भोजन को मन के शुद्ध एवं अशुद्ध होने का कारण मानते हैं। मन ही शुद्धता के लिए भोजन की पवित्रता, स्वच्छता एवं शुद्धता आवश्यक है। अशुद्ध भोजन से अपवित्र विचार एवं मन अपवित्र हो जाता है और वाणी भी अपवित्र हो जाती है।

जैसा अन–जल खाइए वैसा ही मन होय।

जैसा पानी पीजिए तैसी बानी होय।।[3]

कबीर जी मांस, मछली, सभी को अखाद्य मानते है। मछली भक्षन के पाप का कोई भी प्रायश्चित नहीं हैं। नरक भोग से बचाने में न तो कोटि गोदान ही समर्थ है और न काशी में मृत्यु का अंगीकार। चाहे ब्राह्मण हो या अन्य। किसी जाति का मत्स्य भक्षी मनुष्य पतित है।

ब्राह्मण राजा बरनका, और पवन छत्तीस।

रोटी ऊपर माछली, सब बरन भये खबीस।।[4]

कबीर जी धार्मिक अनुष्ठान के नाम संग्रह किया हुआ मांस आदि को भी नरक प्रदायक मानते हैं। चाहे हिन्दू शक्ति पूजा के नाम पर मांस भक्षण करे चाहे मुसलमान भी कुर्बानी के नाम पर मांसा भक्षण करे। उनको भिस्त की प्राप्ति नहीं होती है।

आठ बाट बकरी गई, मांस मुलां गये गाय।

अज हूँ खाल खटीक कै, भीस्त कहां ते जाये।[5]

कबीर जी के अनुसार मांसपरक समस्त धार्मिक अनुष्ठान आस्वादन मात्र के लिए ही होते है। कबीर जी ने जीवन हिसां और उन्हें कष्ट देने वालों की घोर भर्त्सना की है। उनके अनुसार अचल एवं निर्जीव कहे जाने वाले पेड़–पौधों, उनकी पत्तियों में जीव है। एक पत्ता तोड़ना भी हिंसा है। जिस पत्थर की मूर्ति के लिए मालिन फूल एवं पत्ती तोड़ती है। वही भी हिसां है।

भूली मालनि पाती तोड़े, पाती पाती नर जीव।

ज मूरति कौं पति तोड़े, सो मूरति नर जीव।।[6]

कबीर जी का मानना हैं। कि समस्त प्राणियों क प्रति निर्वैर होकर प्रेमभाव के साथ सदाचरण करना अहिंसा धर्म का पालन करना है। जहां प्रेम की भावना है वहां हिसां या जीव वध का भाव खड़ा भी नहीं रह सकता है। मनुष्य का परम कर्त्तव्य प्रेम के साथ समस्त जीवों के प्रति सद्व्यहार करना है।

कबीर के मतानुसार जिस व्यक्ति के हृदय में परमात्मा के प्रति स्वाभाविक प्रेमानुभूति उत्पन्न हो जाती वे मनुष्य मान–अपमान के परे हो जाते है। उनमें अपने पराये का भेद भाव नष्ट हो जाता और न उनको किसी प्रकार का अहंकार रह जाता है और न उन्हें किसी प्रकार के मान–मर्यादा की इच्छा शेष रह जाती है। व्यक्ति अपने और पराये को समान समझने लगता है। आत्मदर्शन हो जाने पर व्यक्ति में वैर, धृणा द्वेष–भावों का लोप हो जाता है। और सबके प्रति प्रेम–भाव से व्यवहार करता है तथा साक्षात् दया, प्रेम, क्षमा एवं शान्ति की प्रतिमूर्ति बन जाता है। उनके मन से स्तुति, निंदा, आशा, मान, अभिमान, दुविधा का लोप हो जाता है तथा समदर्शिता का भाव उत्पन्न हो जाता है। वह परमात्मा के समान हो जाता है।

असतुति निंद्या आसा छाँड़ें, तजै माँन अभिमानाँ।

लोहा कंचन समि करि देखे, तो मूराति भयवानाँ।।[7]

कबीर जी के अनुसार शुद्ध आचरण से ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है शुद्ध आचरण में निम्न तथ्यों का होना अति आवश्यक बताया है।

सत्यः– कबीर जी के अनुसार सत्य वहीं होता है जो स्थिर रहता है। परिवर्तनशील पदार्थ तो असत्य होते हैं। सत्यवादी व्यक्ति सत्य ही बोलता है, सत्य ही ग्रहण करता है। सत्य का पालन करने वाला व्यक्ति निर्भिक हो जाता है। उसका हृदय निर्मल हो जाता है। उसे परमात्मा के सम्मुख उपस्थित होने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता है। उसे किसी प्रकार की कोई भी बाधा नहीं होती। उसे परमगति प्राप्त होती है।

लेखा देणाँ सोहरा, जे दिल साँचा होई।

उस चंगे दीवाँन मैं पला न पकड़े कोई।।[8]

अस्तेयः– जिस वस्तु पर दूसरे का अधिकांर है और उसकी अनुमति के बिना वह वस्तु प्राप्त कर लेनी चोरी कहलाता है। चोरी न करना अस्तेय है। धन, सम्पति, वस्त्र इत्यादि स्थूल पदार्थो की ही चोरी नहीं, बल्कि विचारों तक की भी नहीं होनी चाहिए। कबीर जी ने कहा है कि ईश्वर ने समस्त प्राणियों के आवश्यकतानुसार पदार्थ निर्मित किए हैं। जिसके लिए जितना भोग रचा है उसको उतना ही प्राप्त होता है। उसमें न रती भर घटता है, न तिल भर बढ़ता है चाहे मनुष्य कितना ही प्रयत्न क्यों न करे।

जाको जेता निरमया, ताकौं तेता होई।

रती घटै न तिल बधै, जौ सिर कुटै कोई।।[9]

कबीर जी के अनुसार मनुष्य को किसी वस्तु के अभाव की चिंता नहीं करनी चाहिए उसे निश्चिंत होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। परमात्मा सर्वशक्तिमान है। पशु–पक्षी और अन्य जीव जन्तुओं को भी उनकी आवश्यकतानुसार परमात्मा ने सब कुछ दे रखा है। मनुष्य का यह समझना कि मैं अपने प्रयत्न से

बहुत कुछ कर सकता हूँ, यह असंभव है। परमात्मा ही अप्रत्याशित रूप से समस्त अभावों की पूर्ति करता है। व्यक्ति को व्यर्थ की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। चिंता करने से क्या होगा।

कबीर का तूँ चितवै, का तेरा च्यंत्या होई।

अणच्यंत्या हरिजी करै, जो तोहि च्यंत न होई।।[10]

अपरिग्रहः– अपने स्वार्थ एवं भोग के लिए धन–संपदा तथा भोग सामग्री को एकत्र करना परिग्रह है तथा अनवाश्यक वस्तु के ग्रहण का त्याग करना ही अपरिग्रह है। धन आदि के संचय के लिए मानव अनेक प्रकार के कुत्सित कार्य करने के लिए सतत तत्पर रहता है। सम्पति संचय की मनोवृत्ति के कारण समाज का आर्थिक ढाँचा अस्त–व्यस्त हो जाता है, अराजकता फैलती है धन एक और संचित होता रहता है और दूसरी और अन्य लोगों को धनाभाव हो जाता है। एक धनी हो जाता है। तथा दूसरा निर्धन बन जाता है। संत कबीर ने कहा कि ऐसा धन–संग्रह करना चाहिए जो भविष्य में काम आ सके। कोई धन बाँधकर अपने सिर पर धरकर ले जाता नहीं देखा गया है।

कबीर सो धन संचिए जो आगैं कूँ होइ।

सीस चहाँए पोटली, ले जात न देख्या कोई।।।[11]

इंद्रिया संयमः– मनुष्य के लिए इन्द्रिय संयम अत्यंत जरूरी है। इन्द्रिय के वशीभूत होकर मानव अनेक प्रकार के कष्टों को झेलता हैं। इन्द्रियों के वश में होकर मनुष्य स्त्री में अनुरक्त होता है। जो व्यक्ति दूसरों की स्त्री में अनुरक्त रहता है तथा चोरी की कमाई खाता है वह थोडे दिन के लिए समृद्धिशाली होता है। किन्तु अन्त में जड़ सहित नष्ट हो जाता है।

परनारी राता फिरैं, चोरी बिढता खाँहि।

दिवस चारि सरसा रहै, अंति समूला जाँहि।।[12]

दयाः– प्रताड़ित या उत्पीड़ित व्यक्ति के साथ सहानुभूति रखना ही दया है। दया के अभाव में ज्ञान का कथन–श्रवण दोनों व्यर्थ है। समस्त प्राणी परमात्मा के जीव है, फिर किस पर दया की जाय तथा किस पर निर्दयता का व्यवहार किया जाए। एक ही परम पिता की संताने है।

दयां कौन पर कीजिए कापर निर्दय होय।

साँई के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय।।[13]

क्षमाः– क्षमस्वी व्यक्ति या सज्जन धरती की तरह दुर्जन के समस्त प्रहार या कठोर वाणी को सहन कर लेता है। अन्य व्यक्ति नहीं। क्षमा क्रोध का नाश कर देती है। क्षमाशील व्यक्ति की बराबरी कोई नहीं कर सकता । क्षमस्वी व्यक्ति की वैसे ही कुछ हानि नहीं होती जैसे भृगु मुनि के पाद प्रहार से विष्णु की कुछ हानि नहीं हुई तथा जिस प्रकार समुन्द्र में बिजली पात होने पर समुद्र का कुछ भी नहीं जलता दुर्जन के वचन से क्षमा करने वाले का कुछ भी नहीं जलता।

करगस सम दुर्जन बचन रहें संत जन टारि।

बिजुली परै समुद्र में कहा सकैगी जारि।।[14]

शीलः– शिष्टाचार ही शील है। शील अथाह सुख का सागर है। शील के अभाव मे वैसे ही सुख नहीं होता है। समस्त प्राणियों में शीलवान व्यक्ति श्रेष्ठ एवं सभी रत्नों का खजाना है। शील में तीनों लोकों की सम्पदा अनुस्यूत है।

सीलवंत सब तें बड़ा सर्व रतन की खानि।

तीन लोक की सम्पदा रही सील में आनि।।[15]

विश्वास :– कबीर के दर्शन में विश्वास का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। संत कबीर का कहना है कि जीव को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए उन्हें अपने स्रष्टा को पहचान कर हृदय रूपी मन्दिर में विश्वास रूपी चादर ओढ़कर सुख की नींद सो जाना चाहिए।

रचनहार कूं चीन्हि लै, खैबे कूँ कहा रोई।

दिल मन्दिर मैं पैसि करि, ताँणि पछे बड़ा सोई।।।[16]

श्रद्धाः– कबीर जी के अनुसार जब तक मनुष्य मन एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं कर पाता है। अर्थात् विषयों मे लिप्त रहता है। तब तक मनुष्य में शील, सत्य एवं श्रद्धा की भावना जाग्रत नहीं हो सकती है।

मन न मारया मन करि, सके न पंच प्रहारि।

सील साच सरधा नहीं, इंद्री अज हूँ उधारि।।[17]

विनयः– संत कबीर सन्तों को दया, गरीबी, ज्ञान एवं शान्ति प्रदान करने के लिए परमात्मा से विनय करते है संत कबीर परमात्मा के सामने विनय के अवतार हैः–

कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाँउं

गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाउँ।।[18]

मधुर वचनः– कबीर जी सभी को मधुर वचन बोलने का निर्देश देते हैं। उनके अनुसार मधुर वचन औषाधि के समान रोगनाशक है अर्थात लाभदायक है और कड़वे वचन तीर के समान दुःखदायक हैं जो सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होकर खटकने लगते हैं कबीर ने कागा और कोयल का उदाहरण प्रस्तुत कर मृदु वाणी की महत्ता का बखान किया है कि कागा न तो किसी का धन अपहरण करता है और न कोयल किसी को कुछ देती है। केवल मधुर वचन सुनाकर ही संसार को अपनी और आकर्षित करती है।

कागा काको धन हरै, जग कोयल काको देत।

मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करी लेत।।[19]

धैर्यः– कबीर ने कहा है कि मनुष्य को धैर्य धारण करना चाहिए। धैर्य से सब कुछ की प्राप्ति हो सकती है। उनके अनुसार धैर्य धारण करने के परिणाम स्वरूप ही हाथी को मन भर भोजन मिलता है तथा अधैर्य के कारण ही कुत्ता एक टुकड़े के वास्ते धरों–घर डंडा खाता फिरता हैः–

कबीर धीरजे के धरे, हाथी मन भर खाय।

टुक एक के कारणै, स्वान घरै घर जाय।।[20]

सन्तोषः– कबीर जी के मतानुसार सरलता से प्राप्त वस्तुओं से संतुष्ट रहना अनेक प्रकार के धन सामग्रियों को बेकार कर देता है। सन्तोष के समक्ष सभी प्रकार के धन धूलिवत् होने लगते है।

गोधन गजधन बाजिधंन और रतन धन खानि।

जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान।।[21]

श्रमः– समाज व्यवस्था को सुदृढ़ रखने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना जरूरी है स्वयं कोई न कोई कार्य करके जीवन–यापन के लिए धन उपार्जन करना चाहिए। श्रम करने से अंतः करण स्वच्छ हो जाता है। बिना कर्म किए स्वच्छता नहीं आती है। कर्म से कोई नष्ट नहीं होता। जो व्यक्ति किसी धंधे में संयोजित होकर कुछ नहीं करते, वे भार स्वरूप है और वे निर्मूल हो जाते है।

कबीर जी धंधै तौ धूलि, बिन धंधे धूलै नहीं।

तै नर बिनठे मूलि, जिनि धंधै मैं ध्याया नहीं।।[22]

निष्कर्ष– निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कबीर तत्कालीन समय के महान् समाज सुधारक थे उन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में फैली अराजकता, कुरीतियों, रूढियों, पाखण्डों का खुलकर विरोध किया और मानव को आचार शास्त्र के नियमों को ग्रहण कर स्वयं को व समाज को बदलने का आह्वान किया। कबीर ने अपने आचारशास्त्र में सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, इन्द्रियसंयम, दया, क्षमा, शील, विश्वास, श्रदा, विनय, मधुर वचन, धैर्य, श्रम, सन्तोष आदि गुणों को ग्रहण करके मोक्ष प्राप्ति का सरल उपाय बताया है। और कबीर जी के अनुसार मोक्ष ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

सन्दर्भ–ग्रंथः–

1. कबीर ग्रन्थावली, मन कौ अंग 7 पृ0 22
2. बीजक कबीर चौरापाठ साखी 96, पृ0 393
3. कबीर वचनावली उपदेश 457, पृ0 132
4. सत्य कबीर साखी अंग 8 , पृ0 235
5. सत्य कबीर साखी अंग 19 , पृ0 236
6. कबीर ग्रंथावली, साँच को अंग पद 198 पृ0 116
7. कबीर ग्रंथावली, साँच को अंग पद 184 पृ0 112
8. कबीर ग्रंथावली, साँच कौ अंग 2 पृ0 33
9. कबीर ग्रंथावली, बेसासा कौ अंग 8 पृ0 45
10. कबीर ग्रंथावली, बेसासा कौ अंग 6 पृ0 45
11. कबीर ग्रन्थावली, माया कौ अंग 13, पृ0 26
12. कबीर ग्रन्थावली कामी नर कौ अंग 3, पृ0 30
13. कबीर वचनावली, दया 598 पृ0 145
14. कबीर वचनावली, क्षमा 571 पृ0 142
15. कबीर वचनावली, शीला 565 पृ0 142
16. कबीर ग्रन्थावली, बेसास कौ अंग 3, पृ0 45
17. कबीर ग्रन्थावली, मन कौ अंग 15, पृ0 22
18. कबीर ग्रन्थावली, निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग 14, पृ0 15
19. साखी ग्रन्थ, शब्द कौ अंग 62, पृ0 299
20. साखी ग्रन्थ शब्द कौ अंग 3, पृ0 631
21. कबीर ग्रंथावली, सुरातन कौ अंग 19, पृ0 54
22. कबीर ग्रंथावली चितावणी कौ अंग 21, पृ0 17

डॉ सुरेश कुमार S/o श्री चुन्नी लाल
डाक भेजने का पताः– गांव व डाकखाना– देवसर,
तहसील व जिला– भिवानी
(हरियाणा) पिन कोड़– 127021
मो0 नं0 +91– 8295859900

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM